श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

कृष्ण घर नन्द के जन्मे,प्यारा हो तो ऐसा हो।
वो ले गए चित्त को मोहन,सांवरा हो तो ऐसा हो ॥

बकासुर को मसल डाला,पूतना जान से मारी,
कंस को केश से खींचा,सहारा हो तो ऐसा हो।

श्री कृष्ण घर नन्द के जन्मे,प्यारा हो तो ऐसा हो ॥

कूद पानी के अंदर से,नाग को नाथ के लाये,
चरण फण-फण पे दे देकर,नथैया हो तो ऐसा हो।

श्री कृष्ण घर नन्द के जन्मे,प्यारा हो तो ऐसा हो ॥

तीर जमुना के जाकर के, बजाई बांसुरी मोहन,
चली घर छोड़ बृजनारी, बजैया हो तो ऐसा हो।
श्री कृष्ण घर नन्द के आए,प्यारा हो तो ऐसा हो ॥

रचाया रास कुंजन में, मनोहर रूप धरकर के,
देवगण देखने आए नज़ारा हो तो ऐसा हो।
श्री कृष्ण घर नन्द के जन्मे, प्यारा हो तो ऐसा हो ॥

॥ गीतम् 17 ॥

(अथ सप्तदशप्रबन्धो भैरवीरागेण एकतालीताले गीयते)

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमेषम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥
हरिहरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ॥ 1॥

कज्जलमलिनविलोचनचुम्बनविरचितनीलिमरूपम् ।
दशनवसनमरुणं(न्) तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् ॥ 2॥ याहि माधव

वपुरनुहरति तव स्मरसङ्गरखरनखरक्षतरेखम् ।
मरकतशकलकलितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् ॥ 3॥ याहि माधव

चरणकमलगलदलक्तकसिक्तमिदं(न्) तव हृदयमुदारम् ।
दर्शयतीव बहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारम् ॥ 4॥ याहि माधव

दशनपदं(म्) भवदधरगतं(म्) मम जनयति चेतसि खेदम् ।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् ॥ 5॥ याहि माधव

बहिरिव मलिनतरं(न्) तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम् ।
कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् ॥ 6॥ याहि माधव

भ्रमति भवानबलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधूवधनिर्दयबालचरित्रम् ॥ 7॥ याहि माधव

श्रीजयदेवभणितरतिवञ्चितखण्डितयुवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं(वँ) विबुधा विबुधालयतोऽपि दुरापम् ॥ 8॥ याहि माधव